काफी टेबल बुक एवं सम्मान समारोह के अवसर पर
माननीया कुलपति महोदया का उद्‌बोधन

विजयानगरम हॉल, दिनांक : 01.12.2023

एक गुलाबी जाड़े की चादर ओढ़े फिर से आकर वो शाम दरवाजे पर दस्तक दे रही थी। मैंने पट खोले तो बोली इस 137 बरस के विश्वविद्यालय की दरों दीवार में जो तुम रंग भर रही हो उस पर उत्सव की घोषणा हो गयी है। मैंने हैरां हो उसे देखा, वो बोली, "वरसों से उजड़े इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जो तुमने नवीन शिक्षा वृंद भर डाला है और जिससे प्रदीपित हो उठा है हर कोना उसका, और सारे बागों मे ंरंग बिरंगे पुष्प अपनी आभा बिखेर रहे हैं। परस्पर सुमनस्य संबंध बना रहे, इसलिये अनेक पुष्प गुच्छ लिये है खड़े हैं ढ़ेरों शिक्षक। चहक उठा मेरा मन। मैं आ बैठी आप सबके समक्ष। इक पल की पलक पर ठहरी हुई इस दुनिया में, मैंने भी कुछ खुशियाँ बाँटी है। आप सबका कोटि–कोटि धन्यवाद।"

अगर परस्पर सहयोग न हो तो कोई समाज तरक्की नहीं कर सकता। देखिये प्रकृति हमें कैसे सिखाती है। एक लघु कविता के माध्यम से मैं अपनी बात आपसे निवेदित करती हूँ–

मैं मालिन हूँ

बीज के अन्दर अंकुर ने अंगड़ाई ली,
मदद करी माटी ने, एक न पाई ली।

भू के उपर अंकुर झूम–झूम नाचा
क्या हवा ने नाच सिखलाई ली।
तिरता–तिरता पत्ता तट तक आने लगा,
क्या लहरों ने कोई उतराई ली।
टहनी ने एक फूल को झुमका बना दिया,
क्या टहनी ने कुछ गहना गढ़वाई ली।
कलिका खिल के फूल बनी
सबने देखा, सबने देखा,
क्या डाली ने कोई मुँह दिखाई ली।
फूलों से भर गई धरती की गोदी
अमलतास ने क्या कोई गोद भराई ली।
युगों–युगों तक टप–टप गिरी बूँदें शिलाओं पर,
क्या धरा ने कोई सिल कुटवाई दी।
पानी ने बादल पर खूब सवारी की,
क्या बादल ने कोई सवारी ली।
रंग–बिरेंगे फूल खिल उठे,
फूलों से भर गयी राहे,
क्या कुदरत ने कोई रंगवाई ली।
बागों में फुल खिले, मोर ने आकर नाच दिखाया,
क्या मोर ने कोई नाच दिखलाई ली।

कार्बन डाइ ऑक्साइड पी कर पेड़ों ने ऑक्सीजन दी,
पेड़ों ने न एक भी पाई ली।
सूरज की धूप से धरती सजी
कलिका फूल बनी, चिड़ियों ने उनके बीजों की दावत उड़ाई,
क्या फूल ने कोई पेट भराई ली।
प्रकृति ने दी हमें ढेरों सौगातें,
हम भी सोचें कुछ तो दें प्रकृति को वापस।
कुछ अपने अनमोल कृत्य से अपनी बहुमुल्य सोच से,
वसुन्धरा को ऐसा प्रकाशमान कर जाएँ,
जैसा कर गये पूर्व में राही अनेक।
ये विश्वविद्यालय हमारी वसुन्धरा है
प्रकृति के प्रशिक्षण में हम सब कर जाए कुछ अनोखा।
कुछ नवीन, कुछ अद्भुत अपनी सोच अपने प्रयास से।
न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण।

प्रो0 संगीता श्रीवास्तव
कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय